Training
on
Biological Control of Insect-pests and Diseases in Medicinal Plants

Himalayan Forest Research Institute, Shimla has organized training on "Biological Control of Insect-pests and Diseases in Medicinal Plants" on 12th December, 2015 at the Van Vigyan Kendra, with support from State Forest Research Institute, Jammu for the field staff of J&K forest department This training was primarily focused on the insect pests and diseases incidence in the medicinal plants in the Western Himalayan region and their control measures. About 45 FRO's, foresters and forest guards from Doda, Kishtwar, Bhadarwa and Jammu forest division participated in this training programme.

Sh. Deepak Khanna, IFS, Chief Wildlife Warden, J&K State Forest Department was the Chief Guest in the inaugural session and Dr. V.P. Tewari, Director, HFRI, Shimla presided over the function.

In the beginning, Dr. Ranjeet Singh, organizing secretary welcomed The Guests and participants and brought the attention toward the indiscriminate use of pesticides in the production forestry. He told that the presence of residues of these chemicals in the food commodities and other components of environment proved to be toxic to humans, birds and other beneficial organisms of agroforestry ecosystems and advocated the use of biological control agents in pest management.

Sh. Suresh Gupta, Director, SFRI, Jammu informed that there has been controlled extraction of medicinal plants from the wild in Jammu & Kashmir and limited natural population from J&K were unable to fulfil the growing trade requirements. As a result of increasing demands, many medicinal plants became a regular crops for commercial cultivations in Chenab and Suru valley in Jammu & Kashmir. He also appreciated the initiation taken by the HFRI, Shimla to extend the scientific findings to the officials of department. He also advocated that the cultivation of medicinal plants can be made profitable if the technology developed by the HFRI, be implemented in the field.

Shri Roshan Jaggi, CCF, Jammu expressed the views that detailed information on the pattern of insect pest complex of medicinal plants is of great importance for evolving pest management practices which are ecologically sound and economically feasible.

Dr. V.P. Tewari, Director, HFRI, Shimla in his presidential address, while highlighting the achievements of HFRI, Shimla said that due the change in climate conditions i.e. rise in temperature, receding of glacier in hills, the pest and

disease outbreaks have been observed in almost all tree species in the Himalayan region causing serious damage. Taking into the present trend of climate change, these epidemics are expected to increase in the near future and we are not prepared for it.

Shri Deepak Khanna, IFS, APCCF and Chief Wildlife Warden, Govt. of Jammu & Kashmir Inaugurated the training. He also released a Training Manual on "*Biological Control of Insect Pest and Disease in Medicinal Plants*" and a Technical Bulletin on "*Thysanoplusia orichalcea*: A Pest of Kuth". In his address he emphasized upon the cultivation of medicinal plants and also takes care of them from pests and diseases. He advised the farmers and state forest officials to take correct and timely action against various pests like Mite and white grub. He showed concerns on the serious incidence of different pests on the various tree species, which contribute significantly toward the drying process of indigenous plants in this fragile ecosystem. He said that Insect-pest and disease incidence is one of the major constraints in the cultivation of medicinal plants in Himalayan region and opined that the best way to deal these problems is to develop species specific Biological Control Programme for the important species to begin with and make available to the end users like State Forest Departments.

In the forenoon technical session, Sh. Upendra Pachnanda ex Director, SFRI, Jammu talked about commercialisation of medicinal plant in Jammu & Kashmir with special emphasis on temperate medicinal plants like Kuth, Muskbala, Bankakri, Kutki, and karu etc.and Dr. Lalit Gupta, SKUAST, Jammu explained the production technology with respect to aromatic and medicinal plants to the participants.

In the afternoon technical session Dr. Ranjeet Singh, Scientist-F, HFRI, Shimla discussed in detail on Biological Control of Insect Pests in Medicinal Plants in the state on Jammu & Kashmir and Dr. Ashwani Kumar, Scientist –D, HFRI, Shimla delivered a lecture on Control of Disease in Medicinal Plants.

In the concluding session, participants gave their feedback about the training programme and requested for the more such trainings. Director, HFRI, Shimla chaired the concluding the session. Shri Suresh Gupta, Director, SFRI, Jammu requested HFRI to have more research activities in the J&K state and asked to strengthen the Van Vigyan Kendra, Jammu. Dr. V.P. Tewari, Director, HFRI assured that in future HFRI will have more proactive collaboration with SFRI, Jammu and will take up further programmes to addressed the forestry research needs of the state.

In the end, Shri Pradeep Bhardwaj, Head, Agro-forestry Division, HFRI, extended formal vote of thanks.

GLIMPSES OF THE TRAINING PROGRAMME

TRAINING ON
NMPB
BIOLOGICAL CONTROL OF INSECT-PESTS AND DISEASES IN MEDICINAL PLANTS
Under the Project
Dated: 12" December 2015
Venue: State Forest Research Institute, Jammu
Organised by
Funded by

TRAINING ON
NMPB
BIOLOGICAL CONTROL OF INSECT-PESTS AND DISEASES IN MEDICINAL PLANTS
Under the Project
Dated: 12" December 2015
Venue: State Forest Research Institute, Jammu
Organised by
Funded by

TRAINING ON
BIOLOGICAL CONTROL OF INSECT-PESTS AND DISEASES IN MEDICINAL PLANTS
Under the Project
Dated: 12th December 2015
Venue: State Forest Research Institute, Jammu
Organised by
Funded by

TRAINING ON
NMPB
BIOLOGICAL CONTROL OF INSECT-PESTS AND DISEASES IN MEDICINAL PLANTS
Under the Project
Dated: 12th December 2015
Venue: State Forest Research Institute, Jammu
Organised by
Funded by

Media Coverage

कार्यशाला जैविक नियंत्रण विषय को लेकर आयोजित प्रशिक्षण शिविर में दी गई जानकारी

जलवायु परिवर्तन से बढ़ेगा महामारियों का खतरा

भास्कर न्यूज | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान शिमला के निदेशक डॉ वीपी तिवारी का कहना है कि जलवायु परिवर्तन जैसे कि बढ़ता तापमान ग्लेशियरों के आकार घटने के कारण हिमालय क्षेत्र में लगभग सभी वृक्ष प्रजातियों में कीटों और रोगों के प्रकोप को देखा गया है जिससे भविष्य में गंभीर नुकसान हो सकता है। डॉ तिवारी ने कहा कि जिस तरह से वर्तमान में जलवायु परिवर्तन हो रहा है उससे निकट भविष्य में इस तरह की महामारियां बढ़ने की संभावना है और जिसके लिये हम अभी तैयार नहीं हैं। डॉ तिवारी एमएनआरआई की ओर से जम्मू एंड कश्मीर वन विभाग के क्षेत्रिय कर्मचारियों के लिए औषधीय पौधों के हानिकारक कीटों एवं बीमारियों का जैविक नियंत्रण विषय को लेकर आयोजित प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पश्चिम हिमालयन क्षेत्र के औषधीय पौधों के कीटों एवं बीमारियों की पहचान करना एवं उनके नियंत्रण पर बल देने के लिए आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य वन्यजीव संरक्षक जम्मू एंड कश्मीर दीपक खन्ना ने किया।

औषधीय पौधों के हानिकारक कीटों एवं बीमारियों का जैविक नियंत्रण विषय पर एचएफआरआई की ओर से आयोजित कार्यशाला में भाग लेते अधिकारी।

औषधीय पौधों की खेती को दिया जाए बढावा : दीपक खन्ना ने कहा कि हमें औषधीय पौधों की खेती करने एवं उन्हें कीटों से बचाने पर बल देना चाहिए। उन्होंने किसानों और वन विभाग के कर्मचारियों को सलाह दी कि वे इन अनेक प्रकार के कीटों जैसे की माइट्स और सफेद ग्रफ्स से लडने के लिये उचित समय व प्रौधोगिकी का चयन करना चाहिए। हिमालय क्षेत्र में कीट एवं बीमारियों के हमले ही औषधीय पौधों की खेती में मुख्य बाधा है और इस समस्या से निपटने का सबसे अच्छा तरीका महत्वपूर्ण प्रजातियों के लिए जैविक नियंत्रण कार्यक्रम विकसित करना व उन्हें अंतिम उपयोगकर्ताओं जैसे की राज्य का वन विभाग तक पहुंचाना है। इस मौके पर वानिकी अनुसंधान के वैज्ञानिक डॉ रंजीत सिंह ने वानिकी में अंधाधुंध इस्तेमाल हो रहे कीट. नाशकों की तरफ ध्यान देने की बात कही।

जलवायु परिवर्तन की जद में कीट-पेड़

हिमालयन वन अनसुंधान संस्थान में प्रदेश-पड़ोसी राज्यों के विशेषज्ञों ने किया गहन मंथन

■ विशेष संवाददाता, शिमला

जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय क्षेत्र में लगभग सभी वृक्ष प्रजातियों व कीटों में रोग के प्रकोप देखे जा रहे हैं। इससे भविष्य में बड़ा नुकसान भी हो सकता है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने शनिवार को अपने संबोधन में यह बात कही। औषधीय पौधों के हानिकारक कीटों व बीमारियों के जैविक नियंत्रण विषय पर आयोजित प्रशिक्षण शिविर के दौरान उन्होंने कहा, जिस तरह से जलवायु परिवर्तन हो रहा है उससे निकट भविष्य में इस तरह की महामारियां बढ़ने की संभावना है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पश्चिम हिमालय क्षेत्र के औषधीय पौधों व कीटों एवं बीमारियों की पहचान करने और उनके नियंत्रण पर केंद्रित था। इससे पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य वन्य जीव संरक्षक जम्मू-कश्मीर दीपक खन्ना ने औषधीय पौधों की खेती करने व उन्हें कीटों से बचाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों और वन विभाग के कर्मचारियों को सलाह दी कि वे इन अनेक प्रकार के कीटों जैसे कि नाइट्स और सफेद ग्रब के लड़ने के लिए उचित समय व प्रौद्यौगिकी का चयन करें। इस मौके पर राज्य वन अनुसंधान संस्था जम्मू के निदेशक सुरेश गुप्ता ने बताया कि जम्मू-कश्मीर के जंगलों से औषधीय पौधों की सीमित प्राकृतिक आबादी, बढ़ते व्यापार की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है। बढ़ती मांग के फलस्वरूप जम्मू-कश्मीर के चिनाब और सुर घाटी में बहुत सारे औषधीय पौधों की व्यावसायिक खेती नियमित रूप से हो रही है।

कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल

वैज्ञानिक डा. रजंजीत सिंह ने वानिकी में कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए बताया कि खाद्य वस्तुओं और वातावरण के अन्य घटकों में इन रसायनों के अवशेषों की उपस्थिति मनुष्य, पक्षियों और कृषि-वानिकी, पारिस्थितिक तंत्र के अन्य लाभकारी जीवों के लिए विषाक्त साबित हुई है। उन्होंने कीट प्रबंधन में जैविक नियंत्रण एजेंटों के उपयोग की भी वकालत की।

वन अनुसंधान ने जम्मू में लगाया विशेष कैंप

शिमाला, 12 दिसम्बर (जस्टा): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने शनिवार को जम्मू-कश्मीर वन विभाग के क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिए जम्मू में औषधीय पौधों के हानिकारक कीटों एवं बीमारियों का जैविक नियंत्रण विषय पर प्रशिक्षण कैंप का आयोजन किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पश्चिम हिमालयन क्षेत्र के औषधीय पौधों के कीटों एवं बीमारियों की पहचान करना एवं उनके नियंत्रण पर केंद्रित था। इस प्रशिक्षण में डोडा, किश्तवाड, भद्रवाह और जम्मू वन प्रभाग के लगभग 20 वन अधिकारियों, वन दरोगा एवं वन रक्षकों ने भाग लिया। अपने स्वागत भाषण में प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजक डाक्टर रंजीत सिंह वैज्ञानिक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने सभी मेहमानों और प्रतिभागियों का तहदिल से स्वागत किया तथा इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का शुभारंभ भारतीय वन सेवा दीपक खन्ना ने किया। उन्होंने औषधीय पौधों की खेती करने एवं उन्हें कीटों से बचाने पर जोर दिया।

पड़ोसी पर लगाया धमकाने का आरोप

आनी, 12 दिसम्बर (शिव): यहां के नगान गांव निवासी गुन्दला देवी पत्नी देवराज ने अपने ही पड़ोसी हीरा सिंह पर उसे डराने व धमकाने का आरोप लगाया है। गुन्दला देवी ने इस संबंध में एस.डी.एम. आनी को लिखे शिकायत पत्र में बताया कि उसके गांव के पड़ोसी हीरा सिंह सहित श्याम व लाल सिंह आदि ने उनके खिलाफ पूर्व में चल रहे केस को वापस लेने के लिए हवा में बन्दूक से गोली चलाकर उसे डराने-धमकाने की कोशिश की है। शिकायतकर्ता का आरोप है कि दोषीगण उसके गवाहों पर भी दबाव बना रहे हैं। उसने एस.डी.एम. से अपने बचाव के लिए न्याय की गुहार लगाई है। उधर, इस बारे में एस.डी.एम. आनी डा. सी.एल. चौहान ने बताया कि देवराज की शिकायत पर उन्होंने पुलिस को आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

Release of Publications

Training Manual

on

Biological Control of Insect-pests and Diseases in Medicinal Plants

Kuth in Farmers' Field

Larva of *Thysanoplusia orichalcea*

Biological Control of Defoliator

Field Visit in Lahaul Valley, H.P.

Organized By:

Himalayan Forest Research Institute

(Indian Council of Forestry Research & Education)

SHIMLA-171 013 (H.P.)

December 2015

HFRI

NMPB

Technical Bulletin

Thysanoplusia orichalcea : A Pest of Kuth

RANJEET SINGH
Priyanka Kumari and Narender Kumar

HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE
SHIMLA - 171009

Contribution under the sanctioned project titled, "Biological Control of *Thysanoplusia orichalcea* (F.) (Lepidoptera: Noctuidae) : A Potential Pest of Kuth & Extension of Protection Technology to Local Communities" by National Medicinal Plant Board, New Delhi